शुभकीर्ति

जीवन-परिचय : शुभकीर्ति नाम के अनेक आचार्य हुए हैं—पहले शुभकीर्ति वादीन्द्र विशालकीर्ति के पट्टधर थे और इनका समय 13वीं शताब्दी है। दूसरे शुभकीर्ति का नाम चन्द्रगिरिपर्वत के अभिलेख में आया है, जो प्रमुख वाद विद्वान थे। तीसरे शुभकीर्ति रामचन्द्र के शिष्य थे। चतुर्थ शुभकीर्ति का परिचय लिख रहे हैं। ये अपभ्रंश शान्तिनाथ चरित के रचयिता हैं। ये संस्कृत एवं अपभ्रंश दोनों ही भाषाओं के निष्णात विद्वान थे।

इनका समय विक्रम संवत् की 15वीं शताब्दी है।

रचना-परिचय : शुभकीर्ति ने एक ही ग्रन्थ की रचना की है।

1. शान्तिनाथचरित : शुभकीर्ति द्वारा विरचित अपभ्रंश भाषा में शान्तिनाथ चरित उपलब्ध होता है, जिसकी पांडुलिपि नागौर के शास्त्रभंडार में सुरक्षित है। ग्रन्थ में 19 सन्धियाँ (अध्याय) हैं। भगवान शान्तिनाथ पंचम चक्रवर्ती थे। इन्होंने समस्त षट्खण्डों को जीतकर चक्रवर्ती पद प्राप्त किया था। पश्चात् दिगम्बर दीक्षा ले घोर तपस्या कर केवलज्ञान प्राप्त किया और अन्त में अघातिया कर्मों को नाशकर अचल अविनाशी सिद्धपद को प्राप्त किया। ग्रन्थ के अन्त में कवि ने एक संस्कृत पद्य में ग्रन्थ का रचनाकाल 1436 दिया है।